प्रसाद की साहित्य दृष्टि

डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

प्रसाद की साहित्यिक दृष्टि

डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अप्रैल, 2025

© डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

स्वर्गीया

स्नेहमयी जननी

की

स्मृति में

प्रकाशकीय

‘तुमुल कोलाहल कलह में, मैं हृदय की बात रे मन!’

-प्रसाद

प्रसाद की बहुविचारधारात्मकता के मूल्यांकन के क्रम में, लेखक द्वारा प्रसाद की दृष्टिकोण का जो संधान हुआ है, वही दृष्टिकोण इस पुस्तक में ‘प्रसाद की साहित्य दृष्टि’ के रूप में उपस्थित है। लेखक डॉ. दिनेश्वर प्रसाद ने प्रसाद के अध्ययन-अध्यापन के क्रम में यह अनुभव किया है कि जयशंकर प्रमाद के समालोचनात्मक निबंधों में प्रकट किये गये विचारों की सम्वक् आशंसा आज तक नहीं हो पाई है । डॉ. दिनेश्वर प्रसाद के शब्दों में “प्रसाद के ये निबंध संदर्भ- बहुल है- ये पग पग पर उनके विशाल और वैविध्यपूर्ण अध्ययन को प्रभावित करते हैं। किंतु, उनके अध्ययन के ये संदर्भ न तो विद्वता के प्रदर्शन के रूप में आए हैं और ना अनायास ही समाविष्ट हो गए हैं, वरन् ये परंपरा की मूल्यवान, संरक्षणीय और सांप्रतिक सार्थकता रखने वाली वस्तुओं के रूप में योजित हुए हैं। यदि इनके महत्त्व की सम्यक आशंसा नहीं हुई, तो इसका सबसे बड़ा कारण इन वस्तुओं की, संकेतों के रूप में, योजना है। ये संकेत कविता की वक्रता या ध्वनि की तरह है, जो अपनी बारीकी के कारण अनदेखे रह गए हैं, किंतु आशंसित

होने पर विचारों के बड़े विस्तृत परिदृश्य उद्घाटित करते हैं।"

निश्चय ही, इस पुस्तक में डॉ. दिनेश्वर प्रसाद का उद्देश्य जयशंकर प्रसाद के विचारों के बड़े विस्तृत परिदृश्य को उद्घाटित करना है और इस क्रम में उन्होंने दो खंड और दस अध्यायों में, प्रसाद की साहित्य दृष्टि से लेकर उनकी सांस्कृतिक धारणा, सौंदर्यबोध, कवित्व, काव्य- दृष्टि, काव्य- संकलन, काव्यभाषा, गद्य भाषा, वाद संबंधित दृष्टि, नाट्य दृष्टि, नाट्यरूप, महाकाव्य दृष्टि, महाकाव्य विषयक विचार, कहानी और चंपू विषयक दृष्टि, कहानी विषयक विचार, उपन्यास संबंधी धारणा, प्रसाद द्वारा अविवेचित किंतु प्रयुक्त अन्य साहित्य रूप, जैसे खंडकाव्य, मुक्तक, गीतिकाव्य, निबन्धगीति, गद्यगीति गीति, निबंध के वैचारिक विश्लेषण के साथ प्रसाद की साहित्य- दृष्टि के स्रोतों पर विचार किया है। इस क्रम में उन्होंने प्राचीन भारतीय स्रोत के अंतर्गत वैदिक स्रोत, भरत, आगम दर्शन और अभिनवगुप्त, आनंदवर्धन, कुतक, भारतेंदु हरिश्चंद्र, श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के वैचारिक स्रोत का विश्लेषण किया है। पाश्चात्य साहित्य स्रोत के अंतर्गत उन्होंने प्लेटो, अरस्तू, हीगेल, क्रोचे को उपस्थिति होने के कारण प्रसाद और क्रोचे के साम्य वैषम्य में पर भी विचार किया है। अंतिम अध्याय में लेखक ने परीक्षा स्रोत, प्रसाद की साहित्य- दृष्टि के कुछ अन्य स्रोत के साथ परोक्ष- स्रोत, रवीन्द्रनाथ, द्विजेंद्र लाल राय, शेक्सपियर के नाटकों के अध्ययन के एक साथ समाकलन भी प्रस्तुत किया है।

निश्चय ही एक विशद् वैचारिक पृष्ठभूमि को लेकर यह पुस्तक उपस्थित हुई है। यह विशद् वैचारिक पृष्ठभूमि जयशंकर प्रसाद के उस दृष्टिकोण के संधान के लिए आवश्यक थी, जिसका अन्वेषण लेखक डॉ. दिनेश्वर प्रसाद का लक्ष्य था। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के प्रसाद संबंधी ग्रंथ के रूप में भी डॉ. दिनेश्वर प्रसाद के इस ग्रंथ को देखा जा सकता है।

'प्रसाद की साहित्यिक दृष्टि' में लेखन की खासियत यह है की उसमें कलात्मक कृति का प्रतिपाद्य, विषय- प्रतिपादन, अनुभव जन्य अभिव्यक्ति, ये तीनों बातें प्रमुख स्थान पाती है। इस पद्धति में लेखक का उद्देश्य कृति को उसके वास्तविक रूप में देखकर निरपेक्ष रूचि स्थापित करना है, जो कठिन कार्य है। आलोचक के रूप में डॉ. दिनेश्वर प्रसाद रचनात्मक कृतियों में पूर्णतः लीन होकर उनके उस अनुभव का उद्घाटन करते हैं, जिनसे उन कृतियों की रचना हुई है। इस ढंग से आलोचना करते समय वे रूढ़ि, पूर्वाग्रह, निरोध, भावुकता, सैद्धांतिक आसक्तियों से अलग होते हैं। इस प्रकार की व्याख्या, आलोचना के रचनात्मक स्तर पर, निष्कपटता पूर्वक रचनाकार के भावलोक का फिर से सर्जन करती है और ऐसे भावलोक पर ही उसका निर्णय अवलंबित होता है। ऐसी आलोचनात्मक व्याख्या नवीन अनुभव के संसार से हमारा परिचय करवाती है, साथ ही कृति के साथ एकात्मकता के आनंद का अनुभव देती है। अपने देश में जैमिनी कृत दर्शन (पूर्व मीमांसा) में व्याख्या पद्धति के दर्शन होते हैं।

अरस्तू की 'रेट्रिक' नामक रचना में भी व्याख्या के निबंध में विस्तार से विचार हुआ है। डॉ. दिनेश्वर प्रसाद ने आलोचना के व्यक्तिगत मानदंड स्थापित न करके निरपेक्ष मानदंड स्थापित करने की कोशिश की है।

डॉक्टर दिनेश्वर प्रसाद की इस पुस्तक को पढ़ने से पता चलता है की जितना हम जयशंकर प्रसाद को पढ़ते है उतना ही उनके इतिहास के आधार पर अवलंबित काव्यतत्व कला, सुंदरता, प्रतिभा, हमें अभिभूत करती है। इतिहास का इतना उत्तम उपयोग अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। शताब्दियों से निर्जीव पड़ा हुआ प्राचीन भारतीय इतिहास और सांस्कृतिक गौरव प्रसाद के नाटकों में सजीव होकर मुखर हो उठा है। प्रसाद पर टिप्पणी करते हुए केसरी कुमार ने ये लिखा है "प्रसाद ने रंगीन कल्पना के सहारे दूर अतीत के बिखरे हुए प्रस्तर- खंडों को एकत्रित कर उनमें प्राणी की कविता का रस भर दिया है अतएव परिणामस्वरूप जिन नाटकों का निर्माण हुआ उनका वातावरण रूप और रंग में जगमगाता रहा है। प्रसाद के नाटक मधु से वेष्टित हैं- प्रसाद मूल रूप से कवि हैं, अतः उनके नाटकों में काव्य की गहरी एवं पृथल अनुभूति अंतर धारा बह रही है। उनके सुन्दरतम गीतों का एक बड़ा अंश इन नाटकों में बिखरा मिलेगा। इसके अतिरिक्त वस्तु चयन, पात्रों के व्यक्तित्व, वातावरण, कथोपकथन और सारभूत प्रभाव- सभी में कविता का रंगीन स्पंदन है। प्रसाद की घटनाएं रोमांस और रस से परिपुष्ट हैं- अंधेरी रात में मागंधी और शैलेंद्र का मिलना, चाणक्य का सर्वस्व त्याग,

स्कंदगुप्त और देवसेना की विदाई, मालविका और कोमा का बलिदान, सभी कुछ एक कविता है।" उनका यह कथन भी सही है "वस्तु संकलन से गुरुतर कार्य है वस्तु संगठन। इस दृष्टि से उपन्यास से नाटक अधिक कठिन और टेक्निकल साहित्य है, क्योंकि नाटक- स्रष्टा को न तो वाणी की स्वतंत्रता है और ना पीछे मुड़कर देखने की। और ऐतिहासिक नाटकों में तो उपरोक्त टेक्निकैलिटी परतंत्रता की चोरी पर होती है। यहाँ नाटककारों की वाणी ही मूक नहीं रहती, उनके हाथ- पांव बँध जाते हैं। अतः ऐसे नाटकों का प्रणयन करने वालों में इतिहास की अभिज्ञता के साथ नाटक कला के निपुणता का होना अनिवार्य है। प्रसाद एक ऐसे नाटककार है। इनकी नाटकीय प्रतिभा के साफल्य के मूल्य में उपरोक्त गुण- द्वय की गरिमा ही अंतर्निहित है। यह कहा जाता है कि जयशंकर प्रसाद के पूर्व हिंदी साहित्य में मौलिक कहानियों का सर्वथा अभाव था। कहानियाँ अन्य साहित्यों की कहानियों का अनुवाद होती थी, प्रसाद ने कहानियों के महत्त्व को समझा। उन्होंने 'इंदु' में ग्राम नायक नामक पहली मौलिक कहानी लिखी। प्रसाद की कहानियों में ऐतिहासिक वातावरण का चित्रण हममें प्रेरणा के लिए हुआ है ताकि हम अपने भविष्य का निर्माण अतीत की गौरवमयी आधारशिला पर कर सकें। प्रसाद कहानी में एक विशेष धारा के प्रवर्तक हैं। प्रसाद ने अपनी कहानियों में मानव जीवन के एक अंग को कौन कहे, एक क्षण को भी कला सफलतापूर्वक चित्रित किया है। केसरी कुमार लिखते हैं, "प्रसादी कहानियों की कला बड़ी ही आकर्षक